# सामान्य हिन्दी पुस्तिका
# VI

*सम्पादक मंडल*

**शामुराइलात्पम लोकेन्द्र शर्मा**

**ब्रह्मचारीमयुम रघुमणि शर्मा**

**बोर्ड ऑफ सेकेण्डरी एडूकेशन**

**मणिपुर**

***Published by :***
The Secretary,
Board of Secondary Education,
Manipur

© Board of Secondary Education, Manipur

First Edition : March, 2011
Reprint December, 2016
Reprint December, 2017
Reprint December, 2018
Reprint December, 2019
Reprint August, 2020

Copies 14,000

Price Rs. 60/-

***Printed at :*** ***R B Printing House,***
***Nagamapal, Imphal***

# सचिव का निवेदन

विश्व की बदलती परिस्थितियों, वातावरण और परिवेश के साथ कदम मिलाकर चलने के लिए यह राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-२००५ (एन. सी. एफ, 2005 राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, २०००) यह बोर्ड नेसनल करिक्यूलम फ्रेमवर्क-2005 के अनुसार पाठ्य पुस्तकों का निर्माण कराकर प्रकाशित करता आ रहा है। शिक्षा को उच्च स्तर तक उठाना इस बोर्ड की कोशिश रही है।

जो पुस्तकें राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा - २००० के अन्तर्गत लिखकर प्रकाशित की गईं, उनको नये राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-२००५ (एन. सी. एफ, 2005) के अनुसार संशोधित तथा परिवर्धित कर समयानुकूल बनवाकर प्रकाशित किया जा रहा है। यह भी लक्ष्य रखा गया है कि मणिपुरी वातावरण के साथ उनका संगत हो। इसलिए पूरी सावधानी रखवाकर पुस्तकों को फिर से तैयार करवाकर प्रकाशित किया जा रहा है। लेखकों और परीक्षण-परिमापन करने वालों के साथ बैठकर काफी गहराई तथा विस्तृत रूप से विचार-विमर्श कर पुस्तकों की कमियों और त्रुटियों का परिमार्जन कराकर पुस्तक प्रकाशित की जा रही है।

इस पुस्तक के निर्माण में और छात्रों के द्वारा व्यवहार करवाने में जो समस्याएँ आई उसका समाधान किया गया है। उसके बाद जो परिणाम सामने आए उन कसौटियों पर मैंने लेखकों और सम्बन्धित व्यक्तियों से परामर्श किया है। इस कार्य में लेखकों तथा सम्बन्धित सज्जनों ने जो सहयोग दिया है उसके लिए मैं उन्हें धन्यवाद देता हूँ।

इस पुस्तक को और भी उत्कृष्ट बनाने के लिए जो भी सुझाव सुधीजनों की तरफ से आएंगे उनका सादर स्वागत किया जाएगा। अत: रचनात्मक सुझाव और परिमार्जन के लिए विद्वज्जन अपना सहयोग प्रदान करें।

**— डा चीथूड मेरी थोमेस**
सचीव

# गांधीजी का जंतर

तुम्हें एक जंतर देता हूँ । जब भी तुम्हें संदेह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आज़माओ :

जो सबसे गरीब और कमज़ोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शक्ल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा । क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुँचेगा ? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा ? यानी क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा, जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है ?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा संदेह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है ।

# सम्पादक-द्वय की ओर से

प्रस्तुत पुस्तक 'सामान्य हिन्दी पुस्तिका' बोर्ड ऑफ सेकेण्डरी एडूकेशन, मणिपुर द्वारा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-२००५ (एन. सी. एफ, 2005) के आधार पर तैयार किए गए पाठ्यक्रम के अनुसार छठीं कक्षा के लिए प्रथम भाषा/तृतीय भाषा के पूरक पुस्तक के रूप में तैयार की गई है। इस पुस्तिका में संग्रहीत रचनाओं के चयन करते समय रोचकता, सरलता, स्पष्टता, नीति, राष्ट्रीयता, मानवता, देश-प्रेम, संस्कृति आदि पर विशेष ध्यान दिया गया है। आशा है कि विद्यार्थियों में संकलित रचनाओं के प्रति सहज रुचि उत्पन्न होगी, साथ ही उनके चरित्र-निर्माण में भी सहायता मिलेगी।

प्रत्येक पाठ के अन्त में रचनाओं में आए कठिन शब्दों के अर्थ तथा विद्यार्थियों के विषय-ज्ञान के परीक्षण हेतु अभ्यास के लिए प्रश्न दिए गए हैं। आशा है, अध्ययन-अध्यापन की प्रक्रिया में सहायक सिद्ध होंगे।

**– सम्पादक-द्वय**

*अन्तिम निर्णायक :*

**इबोहल सिंह काङ्जम**

# सीखने के प्रतिफल

**कक्षा छह** **हिंदी**

**बच्चे-**

- विभिन्न प्रकार की ध्वनियों जैसे-बारिश, हवा, रेल, बस आदि को सुनने और किसी वस्तु के स्वाद आदि के अनुभव को अपने ढंग से मौखिक/संकेतिक भाषा में प्रस्तुत करते हैं।
- देखी, सुनी (अनुभव की) गई बातों; जैसे-स्थानीय सामाजिक घटनाओं, कार्यक्रमों और गतिविधियो पर बेझिझक बात करते हैं, प्रश्न करते हैं और बातचीत को अपने दंग से आगे बढाते हैं।
- रेडियो, टी.वी., आखबार, ईटरनेट में देखी/सुनी गई खबरों को अपने शब्दे में कहते हैं।
- विभिन्न अवसरों/संदभो में कही जा रही दूसरो की बातों को अपने ढंग से बताते हैं लिखते हैं।
- अपने परिवेश में मौजूद लोककथाओं और लोकगीतो के बारे में चर्चा करतें हैं।
- अपने से भिन्न, खान-पान, रहन-सहन संबंधी विविधताओं पर बातचीत करते हैं।
- किसी पाठ्यवस्तु की बारीकी से जाँच करते हुए उसमें किसी विशेप बिंदु को खोजते हैं, निष्कर्ष निकालते हैं।
- हिंदी भाषा में विभिन्न प्रकार की सामग्री (पत्र-पत्रिका, इंटरनेट पर प्रकाशित होने वाली सामग्री आदि) को समझकर पढते हैं और उस पर मोखिक/लिखित/ब्रेल/सांकेतिक भाषा में अपनी पंसद-नापसंद, राय, टिप्पणी देते हैं।
- भाषा की बारीकियों/व्यवस्था/ढंग पर ध्यान देते हुए उसकी सराहना करते हैं, जैसे-कविता में लय-तुक, वर्ण-आबृत्ति (छंद) तथा कहानी, निबंध में मुहावरे, लोकोक्ति आदि।
- विभिन्न विघाओं में लिखी गई साहित्यिक सामग्री को उपयुक्त उतार-चढाव और सही गाति के साथ पढते हैं।
- हिंदी भाषा में विविध प्रकार की रचनाओं को पढते हैं।
- नए शब्दों के प्रदि जिज्ञासा व्याक्त करते हैं और उनके अर्य समझने के लिए शब्दकोज्ञा का प्रयोग करते हैं।
- विविध कलाओं से जुडी सामग्री में प्रयुक्त भाषा के प्रति जिज्ञासा व्यत्त करते हुए असकी सराहना करते हैं।
- दूसरों के द्धारा आभिव्यक्त अनुभवें को जरूरत के अनुसार जैसे सार्वजनिक स्धानों (चैपाल, चैराहों, नलों, बस अड्डे आदि) पर सुनी गई बातों का लिखते हैं।
- विभिन्न संदभों में विभिन्न उद्दश्यों के लिखते समय उपयुक्त विराम चिहें, शब्दों, वाक्य संरचनाओं, मुहावरे आदि का उचित प्रयोग करते हैं।

V1P2P9

# पाठ-सूची


| | | |
|---|---|---|
| 1. | राजा शिवि | 1 |
| 2. | ज़ार की बेटी और अज़गर | 5 |
| 3. | हज़रत महम्मद | 10 |
| 4. | दया तथा त्याग की मूर्ति ‘‘ नरसिंह महाराज’’ | 15 |
| 5. | सूर्यग्रहण और चन्द्रग्रहण (लोक कथा) | 21 |
| 6. | त्रिपुरा और मणिपुर का प्राचीन सम्बन्ध: एक ऐतिहासिक दृष्टिकोण | 25 |
| 7. | जनरल थांगाल | 30 |
| 8. | सार सैदय अहम्मद | 35 |
| | मूल कर्तव्य | 40 |
| | राष्ट्रगान | 41 |

I2Z5L7

पाठ–एक

# राजा शिवि

भारत में ऐसे अनेक महापुरुष और राजा-महाराजा जन्म हुए थे जो दान देने में विख्यात हैं। महर्षि दधीचि, राजा हरिश्चन्द्र, इक्ष्वाकुवंशीय राजा नृग, राजा शिवि, दानवीर कर्ण आदि अपने अपने कार्यों के अनुसार दाता के रूप में प्रसिद्‌ध हुए थे। दान देने में वे कभी सन्देह नहीं हुए थे।

राजा शिवि भारत-भूमि के एक सुप्रसिद्‌ध राजा थे। देवराज इन्द्र की सभा में देवगण भी दान-धर्म के सम्बन्ध में राजा शिवि का नाम लिए जाते थे। धार्मिक विचार, धर्म पालन, दया तथा गरीबों को दान देना शिवि पर अलंकृत गुण थे। जो कोई उनसे

कुछ माँगने आता तो वे उसे खाली हाथ नहीं जाने देते थे। आगन्तुकों को संतोष कराना वे अपना धर्म समझते थे। देवता और मानव सब ने सर्वत्र उनकी खूब प्रशंसा की। देवताओं ने उनके दान-संबंधी बातों की परीक्षा लेनी चाही। वे यह स्पष्ट करना चाहते थे कि राजा शिवि की दान-संबंधी बात कहाँ तक सही थी। इसलिए सच्चाई समझने के लिए देवराज इन्द्र और धर्मराज यम दोनों कबूतर और बाज के रूप में राजा शिवि के राजदरवार में आए। जिस समय राजा शिवि अपने दरवार के सदस्यों तथा मंत्रियों के साथ विराजमान थे उसी समय एक कबूतर उड़कर 'रक्षा करो, रक्षा करो' कहते हुए राजा की गोद में आ गिरा। राजा उस कबूतर को उठाकर सम्भाले ही थे कि एक बाज उस कबूतर का पीछा करते हुए उड़कर आया। उसने कहना शुरू किया – " महाराज ! मेरे मुँह से मेरी खाद्य वस्तु मत छीनीए। आप धर्माचार और धर्मदाता हैं। अत: यह कबूतर मुझे दीजिए। मुझे यह कबूतर शीघ्र चाहिए।" कबूतर ने कहा – " महाराज, मैं तो आपके शरण में आया हूँ। मेरा कोई नहीं है सिवाय आपके। आप तो धर्मदाता है; शरण में आए लागों को रक्षा करनेवाले हैं। मुझको इस बाज के हाथ सौंप कर मेरे प्राण को मत खोने दीजिए।"

राजा शिवि के मन में शरण में आए कबूतर की रक्षा करने का दृढ़ विचार रहा। इसलिए उन्होंने बाज से कबूतर के बदले दूसरा मांस लेने को कहा। तब बाज ने कहा– " महाराज, मैं बासी तथा किसी अन्य के हाथों मारा जीव नहीं खाता।" राजा किंकर्त्तव्यविभूढ़ हो गए। फिर राजा ने कहा – " तो बाज, तुम मेरे शरीर का मांस खा सकते हो ?" तब बाज ने कहा – " नहीं महाराज, यह अधर्म है। परन्तु, यदि आप अपने शरीर से इस कबूतर के बराबर वजन का मांस काटकर दे दें तो खाना संभव है।"

राजा शिवि ने उस कबूतर को बचाने के लिए अपने शरीर से मांस काटकर बाज को देना अपना धर्म समझा। राजा ने बाज की बात मान ली और अपना शरीर काटना शुरू किया।

सभी सभासद इसे देखकर ‘ हाय, राम’ चिल्लाने लगे। तराजू की एक तरफ कबूतर बैठा, दूसरी तरफ राजा का कटा मांस रखा। इस तरह कई बार मांस काट देने से राजा का शरीर कामजोर हो गया। फिर भी कबूतर भारी ही होता रहा। अतं में राजा स्वयं तराजू पर बैठ गए।

राजा का धर्मानुष्ठान देखकर धर्मराज यम तथा देवराज इन्द्र दोनों स्वयं प्रकट हो गए। स्वर्ग से फूल बरसाय गए। राजा का कटा शरीर देखते-देखते भर गया। उन्हें पुन: जीवन प्रदान कर दोनों देवता दानवीर राजा शिवि की प्रशंसा करते हुए अपने-अपने स्थान में वापस चले गए।

## कठिन शब्दों के अर्थ—

| | | |
|---|---|---|
| विख्यात | = | प्रसिद्ध, मशहूर। |
| सर्वत्र | = | सब जगह, हर वक्त। |
| विराजमान | = | प्रकाशमान, उपस्थित। |
| किंकर्त्तव्यविमूढ़ होना | = | जो यह न समझ सके कि अब क्या करना चाहिए, भौंचक्का, दुविधा। |
| वजन | = | भार, बोझ, भार का परिमाण। |
| तराजू | = | सामान तौलने हेतु दो पलड़ों का बना एक यंत्र, तुला। |
| धर्मानुष्ठान | = | धार्मिक कृत्य। |

## प्रश्न-अभ्यास

1. राजा शिवि क्यों प्रसिद्ध हैं ?
2. देवराज इन्द्र और यमराज ने राजा शिवि के दान की परीक्षा कैसे ली ?
3. क्या राजा शिवि दान की परीक्षा में सफल हुए थे ?
4. राजा शिवि ने परीक्षा में क्या-क्या किया ?
5. राजा शिवि पाठ का सारांश लिखिए ।
6. अगर आप राजा शिवि की जगह ले लें तो आप क्या करेंगे ?
   क्या आप उनके द्वारा किए गए कार्यों से सहमत हैं ?
7. राजा शिवि पाठ से आप को क्या शिक्षा मिलती है ?
8. राजा शिवि जैसा दाता की कहानी अपने गुरुजनों से पूछकर कक्षा में सुनाइए।

* * * * *

F5E8Q4

पाठ–दो

# ज़ार की बेटी और अज़गर

पुराने समय की बात है। रूस के शहर कोयेव में एक बार कहीं से एक अज़गर आ निकला। उसने वहाँ के हर परिवार से कर के रूप में प्रतिदिन एक-एक सुन्दरी कुमारी को खाने के लिए बारी-बारी से वसूल किया। इस प्रकार वह हर दिन एक-एक सुन्दर कुमारी को खाकर आराम से रहा। ऐसा करते-करते एक बार ज़ार की खूबसूरत बेटी की बारी आई। जार की बेटी अज़गर के पास पहुँची। उसकी सुन्दरता को देखकर अज़गर ने उसे खाना नहीं चाहा बल्कि उसे अपनी पत्नी बनाना चाहा। अज़गर ने जार की बेटी को नहीं खाया और उसे अपने थहाँ सुरक्षित रखा। अज़गर ने उसे अपनी पत्नी बनाने का प्रस्ताव रखा तो उस कुमारी ने अज़गर की बातों को किसी भी बहाने से टाले रखा।

ज़ार की बेटी ने एक कुत्ता पाल रखा। उसने कुत्ते को बहुत प्यार से खिलाया और पिलाया। कुत्ता भी सदा अपनी मालिकन के पास से एक क्षण भी कहीं नहीं जाता था। वह हर समय अपनी मालकिन की देख-रेख और भलाई के काम में लगा रहता था। जार की बेटी ने एक पत्र लिखा। वह पत्र उस कुत्ते के जरिए अपने माँ-बाप के पास पहुँचा दिया। पत्र पाते ही जार को सब कुछ पता चल गया। उसने योजनाएँ बनाईं और आदेश दिया – ‘‘ अपने देश के शक्तिशाली और ताकतवर पुरुष राज सभा में हाजिर हो जाय।’’

अज़गर ने ज़ार की बेटी को बहुत सुरक्षित रखा था। जब कभी वह बाहर जाता तो अपनी खोह के मुँह को लट्ठों से बन्द करके जाता था ताकि ज़ार की पुत्री वहाँ से कहीं भाग न जाए।

मनुष्य की बुद्धि सब प्राणियों में सब से तेज मानी जाती है। ज़ार-पुत्री ने अज़गर के साथ चाहत का नाटक खेला। उसने उससे अधिक ताकतवर प्राणी का पता लगाया। ऐसा करते करते अन्त में ज़ार-पुत्री ने अज़गर की मृत्यु का रहस्य भी जान लिया। अज़गर ने ज़ार-पुत्री को बताया– '' कोयेव में निकीता नाम का एक खटिक रहता है। वह बहुत ताकतवर है। उसकी ताकत मेरी ताकत से अधिक है; उसके हाथों मेरी मृत्यु लिखी है।''

जार की पुत्री ने अज़गर की मृत्यु के रहस्य की खबर अपने माँ-बाप को दी। उसके माँ-बाप ने निकीता खटिक के पास जाकर सारी बातें कहीं। उन्होंने अपनी बेटी को अज़गर से बचाने के लिए निकीता से अनुरोध किया और उसे उस काम के लिए मुँह माँगा दाम देने को भी कहा। निकीता बहुत क्रोधित हुआ और उस काम को करने से इन्कार किया। ज़ार निरुपाय हुआ।

कुछ दिनों के बाद ज़ार ने निकीता के पास अनाथ बच्चोंको भेजा। आँसू भरे अनाथ बच्चों को देखकर उसके मन में दया आ गई। वह काम करने में निकीता स्वीकार हो गया और अज़गर के पास जाने के लिए तैयार हो गया।

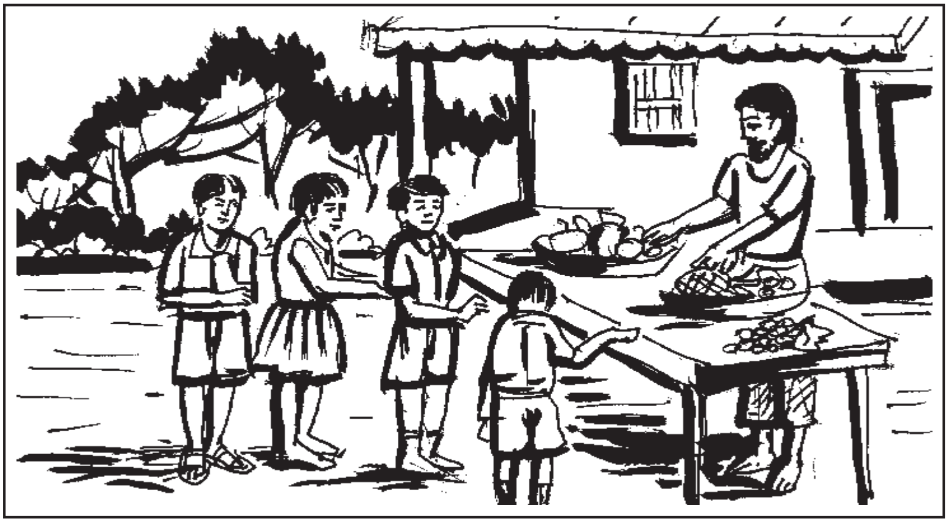

निकीता ने अज़गर की खोह में जाकर युद्ध के लिए अजगर के ललकारा। उसकी ललकार सुनकर अज़गर खोह के बाहर निकला। उन दोनों के बीच काफी देर तक भयानक द्वंद्व होता रहा। आखिर अज़गर हार गया। उन दोनों में क्षेत्र बाँटने का करार हुआ। निकीता ने लकड़ी का एक भारी हल लेकर कोयेव से कस्पीयन सागर तक एक रेखा खींची। उन दोनों के बीच जमीन के बँटवारा होने के बाद निकीता ने अज़गर से फिर कहा – '' हम दोनों के बीच जमीन का बँटवारा तो हो गया, अब सागर का भी बँटवारा होना चाहिए।'' निकीता की बात अज़गर ने स्वीकार की।

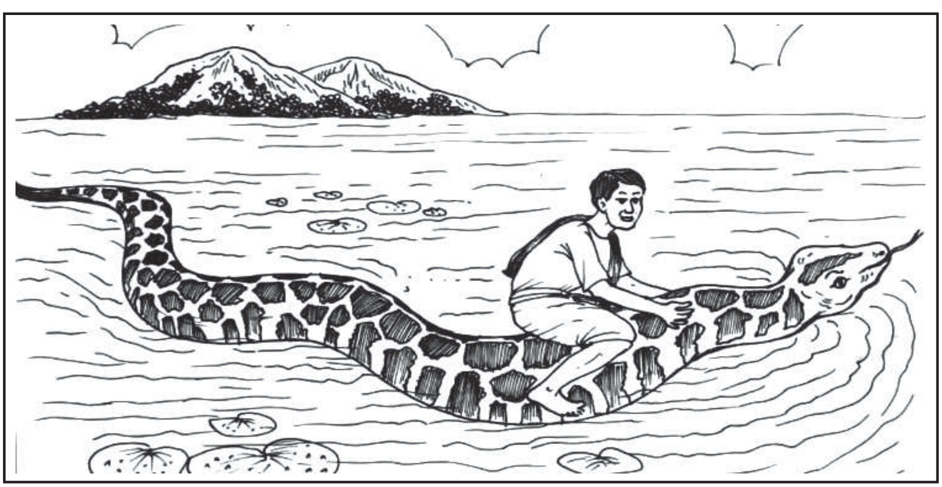

निकीता अज़गर के पीठ पर बैठकर सागर के बीच आ गया। उसने अपनी तलवार से अज़गर पर वार किया और उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए। इस प्रकार अज़गर का अन्त हो गया। ज़ार की बेटी अज़गर से बच गई। वह अपने माँ-बाप के साथ फिर आराम से रहने लगी।

## कठिन शब्दों के अर्थ—

ज़ार = रूस देश के राजधिराज की पदवी

कर = टैक्स, महसूल।

बारी = पारी/पाली।

वसूल किया = उगाहा हुआ, प्राप्त हुआ।

बहाने से = अवास्तविक बात से, मिथ्या से।

टाल रखा = स्थगित कर दिया।

जरिए = साधन।

चाहत = चाह, प्रेम।

खटिक = फलबिक्री, सुअर और कुक्कुट पालने का काम करनेवाला।

निरुपाय = उपायहीन।

ललकार = चुनौती।

द्वंद्व = लड़ाई-झगड़ा।

करार = निश्चित करने का भाव, प्रतिज्ञा, ठहराव।

बँटवारा = बाँटने का काम।

वार = आघात, प्रहार।

## प्रश्न-अभ्यास

1. अज़गर ने जार की पुत्री को क्यों नहीं खाया ?
2. ज़ार की बेटी ने पत्र अपने माँ-बाप तक कैसे पहुँचाया और ज़ार ने क्या किया ?
3. ज़ार की पुत्री ने अज़गर की मृत्यु होने का रहस्य कैसे जाना और वह रहस्य क्या था ?
4. अज़गर को किसने मारा और क्यों ?
5. अजगर की मृत्यु कैसे हुई ?
6. 'ज़ार की बेटी और अज़गर' पाठ का सारांश लिखिए।
7. 'ज़ार' के सम्बन्ध में अपने अध्यापक से विशेष जानकारी प्राप्त करके उसके बारे में पाँच वाक्य लिखिए।
8. ज़ार की पुत्री के बारे में आपके क्या विचार हैं ? लिखिए।
9. इस पाठ से आपको क्या शिक्षा मिलती है ?
10. क्या आप सहमत हैं कि ज़ार की बेटी एक कुशल और साहसी नारी थी ?

* * * * *

Z7J4G3

पाठ–तीन

# हज़रत महम्मद

खृष्ट 570 को अरब भूमि पर मक्का में हज़रत महम्मद नाम का एक लड़का पैदा हुआ था। महम्मद के अम्मीज़ान अमीना बेगम तथा अब्बाजान आब्दुल्लाह को मालूम नहीं था कि वह बच्चा अरब भूमि पर ही नहीं बल्कि सारी दुनिया में प्रकाशमान होगा। अफ़सोस इस बात का है कि उसकी कम उम्र में ही उसके अब्बाजान को खुदा ने इस जमीन से उठा लिया। अगर उसके अब्बाजान जिन्दा रहते तो शायद हज़रत के कार्यों में दखल डाल देते। उसने दो साल अपनी अम्मीजान का स्नेह चखा। इसके बाद वह भी खुदा की प्यारी हो गई। अब हज़रत ने अपने चाचा के पास रहकर जिन्दगी के दुख भरे कदमों को नापा। उसने जिन्दगी के मासूम

वक्त को एक गड़रिया का काम करके बिताया। इस दौरान उसने दुखों को बहुत करीब से देखा। करोबार के लिए वह अपने चाचा के साथ, सीरिया, दामस्कस, बागदाद घूम आया और वहाँ का हाल भी देख आया। रास्ते पर डाकुओं द्वारा किए लूट-पाट, झूठ-फरेब, कत्ल और बेमजहबी कामों को देखकर उसे असीम दुख हुआ।

उस समय अरब में एक नेक और ईमानदार विधवा रहती थी। उसका नाम था खादिजा । एक विधवा होकर भी वह कुदरत के दबाव में आकर ऐसा कोई भी कार्य नहीं करती थी जो मज़हब के विरुद्ध हो। हज़रत बहुत ईमानदार था, हर काम उसने ईमानदारी से किया। उसकी ईमानदारी को देखकर लोग उसे 'अल-ईमान' कहने लगे। खादिजा ने उसको अपने नौकर के रूप में रखा। शुरू से ही हज़रत स्वभाव में न्यायप्रिय था। एक बार काबा की मस्जिद में एक पत्थर की स्थापना को लेकर कई फिरकों के बीच झगड़ा होने लगा। सब लोग अपने अपने नेताओं से वह पवित्र पत्थर रखवाने की कोशिश कर रहे थे। इसकी वजह से वहाँ दंगा होने की सम्भावना हो रही थी। अगर दंगा होता तो बहुत लोग मारे जाते। मगर ऐसा

नहीं हुआ। हज़रत महम्मद ने वैसा नहीं होने दिया। उसने एक कपड़ा बिछा दिया और इस पर वह पत्थर रखवा दिया। उसने लोगों से कहा – " आप लोग इस कपड़े को पकड़कर पत्थर को उठाइए और ले जाकर उसी मूल स्थान पर रखिए जो इसे रखने के लिए तैयार किया गया है। " इस प्रकार हर नेता के हाथ उस पत्थर की स्थापना में लगवा दिए।

हज़रत महम्मद की बुद्धिमानी और ईमानदारी को देखकर खादिजा ने उससे शादी करली कुछ दिनों के बाद जब एक दिन हज़रत रजाई ओढ़ कर सो रहा था तब उसे एक आवाज सुनाई दी – " तू क्यों सो रहा है ? अशिक्षित लोगों की अज्ञानता को मिटा दे। खुदा हमेशा तेरे साथ रहेगा।"

उसी दिन से उसने सांसारिक बन्धनों को तोड़कर लोगों को उपदेश देना शुरू किया। उसने एक नया धर्म अपनाया। उस नए धर्म का नाम 'इस्लाम' रखा। उसके मानव-कल्याणकारी भावनाओं को देखकर बहुत लोग उसके शिष्य बन गए। उसने अरब के अलग-अलग विचारवाले लोगों को एक ही सूत्र में पिरोकर उनके मन में एक साथ रहने की भावना पैदा कराई। उसने बताया – " ईश्वर एक है। इस दुनिया में ऐसी कोई जगह नहीं है जहाँ खुदा न हो।" लेकिन कुछ काफिरों ने गलत इलजाम लगाकर उसके कार्यों को बेमजहबी

कहा और उसे मौत की सजा देने की माँग की। मक्का के लोगों ने महम्मद को बहुत तंग किया जिससे बरदास्त न होकर वह भाग गया। कई सालों के बाद वह फ़ौजी बनकर मक्का में फिर वापस आया।

अरब पहले की तरह दंगाबाजी और कतलबाजी वाली जगह नहीं रही। महम्मद ने मक्का में रहकर दुनिया को चौंकानेवाला काम किया। उसने इस्लाम मजहब के जरिए अरब को शान्ति की जगह बना दी। उसके उपदेश थे – " देश की नारियों को माता तथा बहन समझो, उनकी इज्जत करो, धन की लेन-देन में ब्याज लेना बुरा है, सब इन्सान एक खुदा की औलाद है, हर इन्सान से प्यार करो तो खुदा भी तुमसे प्यार करेगा।" उसके सभी उपदेश इस्लाम धर्म के पवित्र ग्रन्थ 'कुरान' में लिखा गाया है।

## कठिन शब्दों के अर्थ—

| | | |
|---|---|---|
| मासूम | = | निरपराध, बेगुनाह, पापरहित। |
| गड़रिया | = | भेढ़-बकरियाँ चरानेवाला। |
| कारोबार | = | कार्य-व्यापार। |
| बेमजहबी | = | अधार्मिक। |
| नेक | = | अच्छा, उम्दा, भला। |
| क़ुदरत | = | ईश्वर की शक्ति, प्रकृति। |
| फ़िरकों में | = | समुदायों में। |
| दंगा | = | मार-पीट, लड़ाई-झगड़ा, उपद्रव। |
| काफिर | = | इस्लाम धर्म को न माननेवाला। |
| इलज़ाम | = | दोष, आरोप, अभियोग। |
| बरदास्त | = | सहन करने की शक्ति। |

जरिए = साधन।

ब्याज = सूद, मूलधन के अतिरिक्त दिया जानेवाला धन।

औलाद = संतान, वंशज।

इन्सान = आदमी, मनुष्य, मानव।

## प्रश्न-अभ्यास

1. हज़रत महम्मद कहाँ पैदा हुए थे ? उनके माँ-बाप के नाम क्या-क्या थे? उनका बचपन कैसा था ?
2. हज़रत महम्मद को अल-ईमान क्यों कहा गया ?
3. क़ाबा की मस्जिद में झगड़ा क्यों हुआ ? वह झगड़ा किसने और कैसे शान्त कराया ?
4. पवित्र पत्थर संबंधी क़ाबा के झगड़े का वर्णन संक्षेप में लिखिए।
5. विधवा खादिजा ने हज़रत महम्मद से शादी क्यों की ?
6. सोते समय हज़रत महम्मद ने क्या आवाज सुनी ? उसने लोगों से क्या बताया ?
7. हज़रत महम्मद का उपदेश क्या था ?
8. हज़रत महम्मद की जीवनी संक्षेप में लिखिए।
9. सिख, ईसाई, बौध धर्मों के गुरुओं और धार्मिक ग्रंथों के नाम लिखिए।
10. इस्लाम धर्म की पुस्तकें पढ़िए और उस धर्म के बारे मे दस वाक्य लिखिए।

* * * * *

Z9M6U9

पाठ–चार

# दया तथा त्याग की मूर्ति ''नरसिंह महाराज''

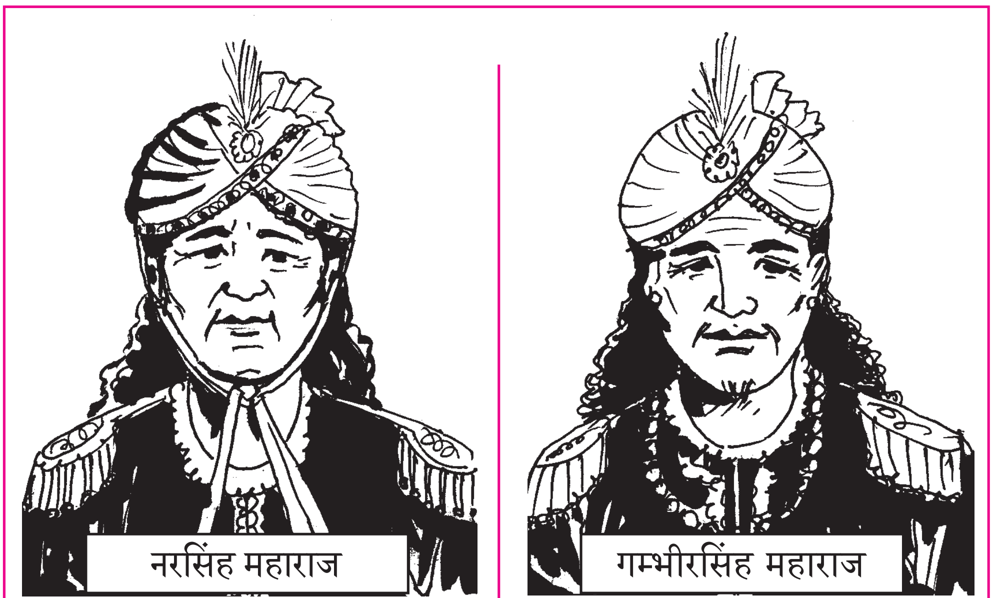


इतिहास साक्षी है कि राज परिवार में तथा राजमहलों में राजसिंहासन की लालच से पुत्र पिता के और भाई भाई के विरुद्ध लड़ाई करते थे। विश्व के इतिहास में ऐसी घटनाओं की कोई कमी नहीं थीं। उनके मन में पाप-पुण्य का कोई विचार नहीं था। पुत्र पिता को भाई भाई को मार कर सिंहासन हासिल करने की कोशिश सदा करते रहते थे। लेकिन इसके ठीक विपरीत दया, त्याग और प्रेम से भरा हुआ दिल और आत्मीयता प्रकट कर सकनेवाले कई राजकुमार भी हुए थे। श्री रामचन्द्र ने अपने पिता के वचन-पालन के लिए तथा भीष्म पितामह ने अपने पिता शान्तनु के लिए सिंहासन त्याग दिया। उसी प्रकार

मणिपुर के राजा नरसिंह ने भी अपने सौतेले भाई गम्भीर सिंह के लिए यथासंभव त्याग दिया। सगे भाई नहीं होकर भी वे दोनों इतने प्यार, इतनी श्रद्धा और इतने मेल-मिलाप से रहते थे कि कोई कह नहीं सकता था कि वे सगे भाई नहीं थे।

राजर्षि भाग्यचन्द्र महाराज की मृत्यु के बाद सिंहासन को लेकर राज परिवार में एक दूसरे के कान भरने लगे और झगड़े हुए। महाराज चौरजित सिंह के अनुचित और लालची कार्यो से अवा(वर्तमान म्यान्मार) के सैनिकों ने लाभ उठाकर मणिपुर को बहुत ही दयनीय तथा कष्टप्रद दशा में रखा। कई बेकसूर मणिपुरी बाल-बच्चों, स्त्रियों तथा वृद्‌ध लोगों को मारा गया। मणिपुर अवा के आक्रमण में पराधीन हो गया। सारी प्रजा त्राहि-त्राहि करने लगी। जनरल हिटलर ने सारी यहूदी जनता को तड़पा-तड़पा कर मारा था। उसी प्रकार अवा सैनिको ने मणिपुर के स्त्री-पुरुष, बाल-बच्चे, आदि को तड़पा कर मारा था। मणिपुर के इतिहास में इस कष्टप्रद कालावधि को '' चही तरेत्‌ खुन्‌ताकपा'' कहकर जाना जाता हैं।

नरसिंह ने गंभीर सिंह की बहुत सहायता की। उसने उन अत्याचारी अवा के सैनिकों को बड़ी कुशलता से कूटनीति द्वारा आत्मसमर्पण कराया। गंभीर सिंह को मणिपुर का राजा बनाया गया। सादगी स्वभाव का पुरुष नरसिंह ने युवराज पद तक लेने की इच्छा नहीं की। उसने मणिपुर के बाहर तथा राज परिवार के अन्दर के कलहों को बड़ी होशियारी से संभाला। सेनापति बन कर उसने अपने बाहु बल से पहाड़ी या घाटी की छोटी-मोटी लड़ाइयों को संभाला। राजा गंभीर सिंह की मृत्यु के बाद अगर वह राजा बनना चाहता तो उस समय उसपर आपत्ति करनेवाला कोई नहीं था। परन्तु वह राजा नहीं बनें क्योंकि राजा बनने की इच्छा उनमें नहीं थी। मृत्युशय्या पर पड़े अपने अग्रज गंभीर सिंह द्‌वारा उनके हाथों सौंपे तीन वर्षीय चन्द्रकीर्ति को राजा बनाना उसकी चाह थी। अत: उन्होंने अपने अनुज देवेन्द्र को सेनापति पद देकर सुख और शांति से शासन करते रहे। उस समय भी राजसिंहासन की लालच में होनेवाले कलहों को उन्होंने अपने वश में रखकर शान्त कराया।

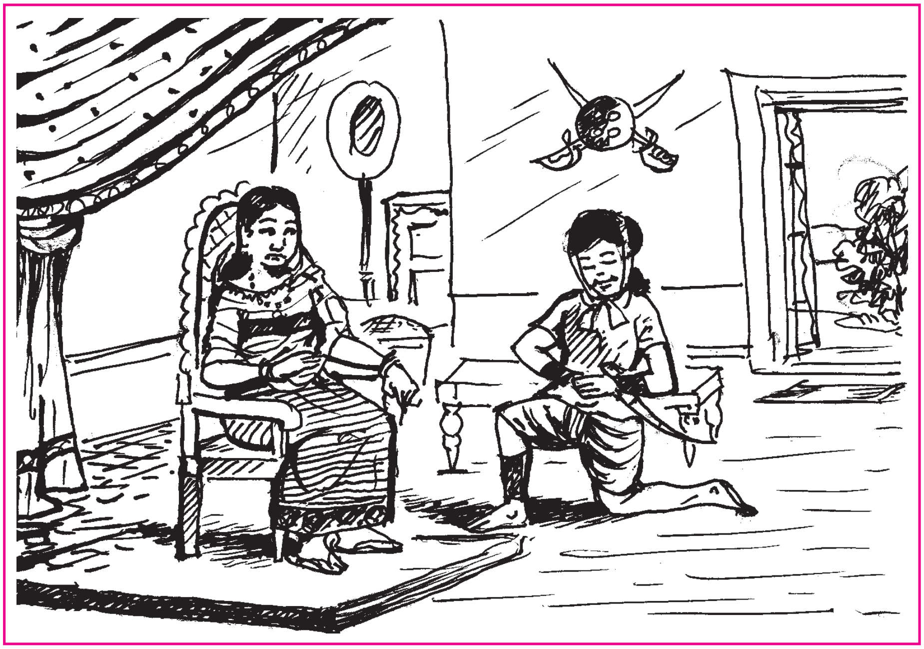

चन्द्रकीर्ति की माता कुमुदिनी भी एक नारी थी। नारी हृदय होने के नाते उन्हे नरसिंह के कार्यो में शंका और ईर्ष्या होने लगी। उसने नरसिंह को कतल कराने का षढ़यंत्र रचना शुरू किया। इसकी भनक पाते ही नरसिंह मणिपुर के बाहर चले गए। मणिपुर के बाहर रहकर भी उन्होने चन्द्रकीर्ति की सुरक्षा के लिए चुपचाप काम किया। कालान्तर में राजद्रोहियों तथा षढ़ यंत्रकारियों को पकड़ लिया गया, उनको मृत्यु दण्ड नहीं देकर केवल समझा-बुझाकर छोड़ दिया गया। ऐसे ही त्यागी व गुणयुक्त पुरुष थे नरसिंह।

महारानी कुमुदिनी के इशारे से नवीन ने नरसिंह को कतल करने के लिए तलवार से वार किया। नरसिंह तो नहीं मरे, उनकी बाईं भूजा पर मामूली चोट लगी। ऐसे जान लेने की कोशिश किसी अन्य राजकीय व्यक्ति के साथ हुआ होता तो नवीन उस को जीवित नहीं छोड़ता। नरसिंह ने उसे अभयदान देकर मणिपुर के बाहर किसी अन्य स्थान में जाने को कहा। युवराज नर सिंह तथा जनता के भय से राजमाता कुमुदिनी चन्द्रकीर्ति महाराज को लेकर भाग गईं। तब भी नरसिंह ने राजा बनने का विचार नहीं किया। उन्होने पत्र द्वारा राजमाता को अपने पुत्र के साथ तुरन्त वापस आने की प्रार्थना की।

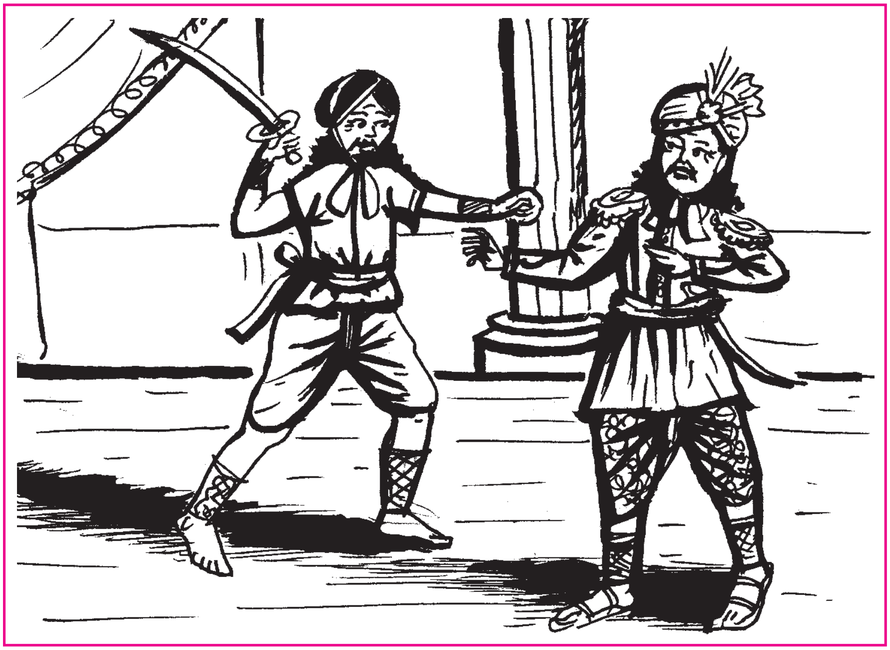

राज्य में शंका तथा भय की सीमा का अन्त नहीं हुआ। मणिपुर की शासन व्यवस्था बिल्कुल ही बिगड़नेवाली थी कि नरसिंह ने इस अवस्था को सम्भालने के लिए चन्द्रकीर्ति के नाम पर शासन की बागडोर अपने हाथों में ली। सन् 1843 के माघ महीने की 19 वीं तिथि वृहस्पतिवार के सुबह नरसिंह राज सिंहासन पर बैठे। उन्होने अपने भाई देवेन्द्र को युवराज बनाया। परन्तु परमात्मा की लीला कौन जाने ! यह त्याग तथा दया की मूर्ति नरसिंह वैशाख महीने के ग्यारहवीं तिथि सोमवार को इस पवित्र भूमि को त्याग कर हमेशा के लिए स्वर्गधाम चले गये।

## कठिन शब्दों के अर्थ—

हासिल करने की = प्राप्त/लब्ध करने की।

आत्मीयता = अपनापन, स्नेह संबंध।

कान भरने लगे = किसी को किसी के विरुद्ध भड़काने लगे।

| | | |
|---|---|---|
| तड़पा-तड़पा कर | = | अत्यधिक कष्ट पहुँचा कर। |
| आत्म समर्पण | = | अपने आप को सौंप देना, हथियार डाल देना। |
| सादगी | = | सादापन, सरलता, भोलापन। |
| कलह | = | लड़ाई-झगड़ा, युद्ध। |
| षढ़यंत्र | = | साजिश, दुरभिसंधि। |
| भनक | = | उड़ती खबर, मन्द ध्वनि। |
| कालांतर | = | अपने समय के बाद होनेवाला, अन्य समय, अंतराल, नियत समय के बाद का समय। |
| इशारे से | = | संकेत से। |
| राजकीय | = | राज्य संबंधी, राज्य का। |
| अभयदान | = | भय से रक्षा का वचन देना, शरण देना। |
| बागडोर | = | लगाम में बाँधी जानेवाली रस्सी। |

## प्रश्न-अभ्यास

1. इतिहास किस बात का साक्षी है ?
2. नरसिंह और गंभीर सिंह दोनों भाइयों के आदर्श गुण क्या-क्या थे ?
3. राजर्षि भाग्यचन्द्र के बाद हुई मणिपुर की अवस्था संक्षेप में लिखिए।
4. नरसिंह ने क्या-क्या त्याग दिए ?

5. क्या राजमाता कुमुदिनी का षढ़यंत्र सफल हुआ ? नहीं तो, क्यों ?

6. नरसिंह ने मणिपुर के राजा चन्द्रकीर्ति के लिए क्या-क्या किए ?

7. नरसिंह को दया तथा त्याग की मूर्ति क्यों कहा गया ?

8. नरसिंह की दया और त्याग का चित्रण कीजिए।

9. अपने गुरुजनों से पूछकर नरसिंह के अन्य गुण लिखिए और कक्षा में सुनाइए।

10. अपने अध्यापक से पूछकर 'चहि तरेत् खुनृताकपा' के बारे में दस वाक्य लिखिए।

* * * * *

X6U3Z6

**पाठ–पाँच**

# सूर्यग्रहण और चन्द्रग्रहण (लोक कथा)

हिन्दुओं में एक प्रचलित कथा चली आई है कि सूर्य और चन्द्र में ग्रहण लगना राहु नामक एक असुर के प्रभाव से होता है। यह पौराणिक कथा श्रीमद्‌भागवत के अष्टम स्कन्ध के नवाँ अध्याय से सम्बन्धित है। लेकिन इस सम्बन्ध में कोम जाति का भी अपना एक अलग विश्वास है। इस विश्वास से संबंधित कथा इस प्रकार है।

पुराने समय की बात है। किसी एक परिवार में सात भाई रहते थे। एक दिन वे जंगल में काम करने गए । सब से छोटे भाई पर खाना बनाने का काम सौंपकर शेष छह भाई जंगल साफ करने गए। छोटा भाई एक पेड़ के नीचे बैठकर थोड़ा आराम कर रहा था। तब उसके भाइयों ने एक अज़गर को पकड़ा और उसे पकाने के लिए कहकर फिर काम पर लौट गए। छोटे भाई ने अज़गर के सात टूकड़े किए और एक बर्तन में पकाने लगा। उस बर्तन से इतनी भाप निकली कि पेड़ से एक पत्ता टूट कर बर्तन में गिर गया। जब बर्तन में पत्ता गिरा तब अज़गर जीवित होकर उस बर्तन से निकल कर चला गया।

यह देखकर छोटा भाई चकित रह गया। वह इतना घबड़ा गया कि वह सोचने लगा उसके सब भाई अवश्य ही उसपर नाराज होंगे। थोड़ी देर बाद उसके भाई भूखे और थके-माँदे वापस आए। उन्होंने भोजन देने के लिए कहा। छोटे भाई ने घटना की सारी बातें कह सुनाई, परन्तु उन्होंने उसकी बातों पर विश्वास नहीं किया। उन्होंने छोटे भाई को बहुत मारा-पीटा और उसके हाथ-पैर तोड़कर वे चले गए। छोटा भाई निराश्रय होकर वहाँ पड़ा रहा। अन्त में उसने सोचा कि कटा अजगर उस पेड़ के पत्ते के छूने से जीवित होकर चला जा सकता है तो शायद वह भी उस पेड़ को छूने से सब-कुछ ठीक हो सकता है। उसने खूब कोशिश कर उस पेड़ को छूआ। जैसे ही उसने पेड़को छूआ वैसे ही उसके अंग बिल्कुल ठीक हो गए।

छोटे भाई ने उस पेड़ की कुछ छाल छिलकर ले ली। वह घर वापस आ रहा था तब रास्ते पर सिर कटा हुआ एक मरा कुत्ता पाया। उसने उस पेड़ की छाल निकाल कर उस कुत्ते के सिर पर छूआ। कुत्ता तुरन्त जीवित हो गया। वह उस कुत्ते के साथ घर की तरफ आया। रास्ते में उसने रोने की एक आवाज सुनी। पूछने पर पता चला कि वहाँ एक सुन्दर युवती मर गई है। उसने छाल निकाली और उससे युवती के शरीर पर छूआ तब वह युवती

जीवित हो गई। वहाँ के सब लोग बहुत खुश हुए। उस युवती का विवाह उससे कर दिया गया। बाद में छोटा भाई अपनी पत्नी के साथ अपने घर आया।

छोटे भाई की पत्नी उस पेड़ की छाल के गुण और शक्ति नहीं जानती थी। एक दिन जब उसके पति खेत में काम करने गए तब उसने छाल निकाल कर धूप में सूखा दी। उस छाल के गुण अनुपम है। सूर्य और चन्द्रमा दोनों शीघ्र ही पृथ्वी पर उतर आए और उन्होंने उस छाल को ले जाने का प्रयत्न किया। कुत्ते ने उसे देखा और जोर-जोर से भौंका। सूर्य और चन्द्रमा छाल और कुत्ता दोनों को पृथ्वी से उठाकर ले गए।

छोटा भाई खेत से घर वापस आया। छाल और कुत्ता दोनों को वहाँ अपने घर में न पाने से उसे बड़ा दुख हुआ। स्वर्ग में कुत्ते ने अपने मालिक की दुखी अवस्था देखी तो वह भी बहुत दुखी हुआ।

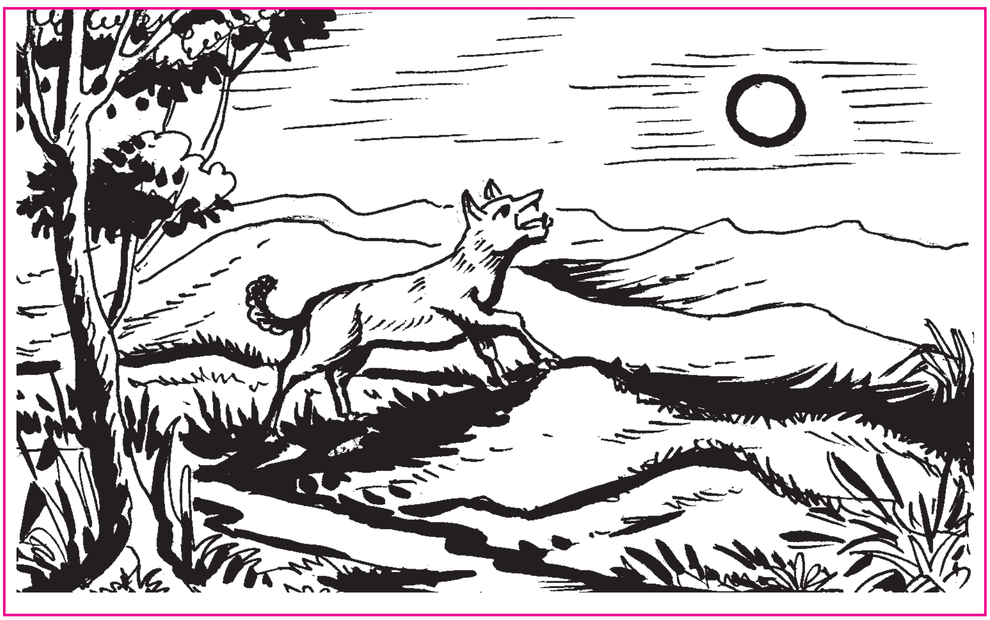

अपने मालिक की दुखी अवस्था देख कर कुत्ता बहुत नाराज हुआ और असह्य होकर सूर्य और चन्द्रमा पर झपटा। जब कुत्ता सूर्य पर झपटता है तो सूर्यग्रहण होता है और इसी तरह चन्द्रमा पर झपटता है तो चन्द्रग्रहण होता है। इसी प्रकार सूर्यग्रहण और चन्द्रग्रहण के रूप में पृथ्वी पर रहनेवाले मनुष्यों को दिखाई देता है।

## कठिन शब्दों के अर्थ—

| | | |
|---|---|---|
| भाप | = | वाष्प, खौलते जल का वाष्पीय रूप। |
| चकित | = | विस्मित, आश्चर्य में आया हुआ; शंकित, घबराया हुआ। |
| निराश्रय | = | निरालंब, बेसहारा। |
| छाल | = | वृक्ष आदि के तने पर का कड़ा खुरदारा और मोटा छिलका। |
| छिलना | = | उतारना, खाल उधेड़ना। |
| छिलकर | = | पशु आदि की खाल उतार जाना। |
| असह्य | = | न सहने योग्य। |
| अनुपम | = | अपूर्व, असामान्य, असाधारण। |

## प्रश्न-अभ्यास

1. अन्य भाई छोटे भाई पर नाराज क्यों हुए और उन्होंने उसे मार-पीट कर हाथ-पैर क्यों तोड़ा ?
2. छोटा भाई घर वापस कैसे आया और साथ में कौन-कौन आए ?
3. धूप में सूखने को रखी छाल को देखकर सूर्य और चन्द्र दोनों ने क्या किया ?
4. कुत्ता सूर्य और चन्द्रमा पर क्यों झपटा ?
5. सूर्यग्रहण और चन्द्रग्रहण होने में कोम जाति का विश्वास क्या है ?
6. कोम जाति में प्रचलित सूर्यग्रहण और चन्द्रग्रहण की कथा संक्षेप में लिखिए ?
7. क्या अन्य भाइयों द्वारा अपने छोटे भाई को मारना-पीटना और हाथ-पैर तोड़ना सही है या नहीं ? आपके विचार व्यक्त कीजिए।
8. क्या आप सहमत है कि अन्य भाइयों की अपेक्षा छोटा भाई अधिक बुद्धिमान है ?

* * * * *

N5Q3S7

पाठ–छह

# त्रिपुरा और मणिपुर का प्राचीन सम्बन्ध: एक ऐतिहासिक दृष्टिकोण

त्रिपुरा बहुत ही प्राचीन राज्य है। एक समय था; वहाँ के लोगों में इतिहास लिख कर रखने की प्रथा नहीं थी। फिर भी जनश्रुति के आधार पर त्रिपुरा की सीमा काफी लम्बी-चौड़ी थी। प्राचीन त्रिपुरा के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए हमें 'राजमाला' नामक ग्रंथ खोल कर देखना पड़ता है। इस ग्रंथ में त्रिपुरा का ऐतिहासिक विवरण काव्यात्मक शैली में लिखा हुआ है।

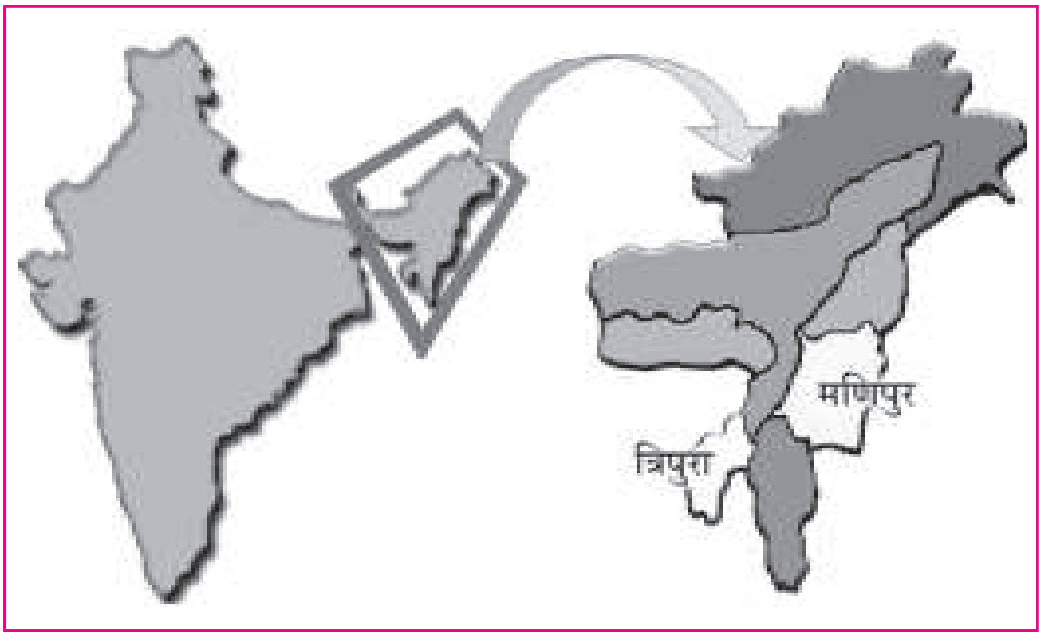

राजमाला तथा इतिहासकारों के अनुसार त्रिपुरा का राजवंश आदि कालीन चन्द्रवंश से जुड़ा हुआ बताया जाता है। एक बार चन्द्रवंशीय राजा ययाति ने क्रुद्ध होकर अपना पुत्र राजकुमार द्रुह्य को अपने राज्य से निर्वासित किया था। राजकुमार द्रुह्य किरात के राज्य में आया। उसने किरात राज को पराजित कर अपने राज्य की स्थापना 'कोपल' नदी के किनारे की थी। उन्होंने अपने राज्य की राजधानी का नाम 'त्रिवेग' रखा था। इसी त्रिवेग के त्रिपुरा होने का उल्लेख राजमाला में किया गया है। लेकिन त्रिपुरा राज्य के नामकरण संबंधी बातों में पंडितों और इतिहासकारों ने अगल-अलग मत और वाद-विवाद प्रस्तुत किए हैं। अब इस संबंध में और खोज करने की जरूरत पड़ रही है।

त्रिपुरा के प्रथम राजा माणिक्य थे। उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक उनके वंशज त्रिपुरा में शासन करते आए थे। सन् 1761 में त्रिपुरा अंग्रेजों के हाथ में पड़ गया।

इस प्रकार मणिपुर में भी कई राजा-महाराजाओं ने राज किए थे। त्रिपुरा का राजमाला जैसा ग्रंथ 'चैथारोल कुम्बाबा' यहाँ भी मौज़ूद है। इस ग्रंथ से यह पता चलता है कि सन् 33 में नोङ्दा लाइरेन पाखङ्बा मणिपुर के राजसिंहासन पर बैठे थे। इसके पश्चात क्रमशः कई राजा-महाराजाओं ने मणिपुर पर शासन किए थे। प्राचीन काल में मणिपुर को 'पोइरै मैतै', 'कङ्लैपाक' अथवा 'मैत्रबाक' कहकर जाना जाता था। मणिपुर को पड़ोसी राज्यों और देशों के लोगों जैसे कि असमियों ने 'मेखला, मेखली', काछाड़ियों और त्रिपुरियों ने 'मोगली', शान लोगों ने 'कासे' तथा बरमियों ने 'कथे' कहकर जाना। दूसरी तरफ मैतै लोगों ने बरमा को 'अवा', असाम को 'तेखाउ', त्रिपुरा को 'तखेल' तथा चीन को खागी के नाम से जाना।

मैतै राजाओं को मैदिङ्ङु कहकर जाना जाता था। उस समय राजा के बदले मैदिङ्ङु कहा करता था जैसे मैदिङ्ङु नाउथिङ् खोङ, मैदिङ्ङु क्याम्बा, मैदिङ्ङु खागेम्बा, आदि आदि। मणिपुर में कई मैडिङ्ङु राजाओंने राज किया था। मैदिङ्ङु क्याम्बा सन् 1476 में सिंहासन पर बैठे थे। उसके राज्य-काल से मणिपुर के इतिहास

में एक नया अध्याय शुरू हुआ। सन् 1709 को गरीबनिवाज महाराज सिंहासन पर बैठे। उसने बरमा पर चढ़ाई करके अपने पिता के प्रति किये कार्यों का प्रतिशोध लिया और अपने पिता की इच्छा पूरी कर दी। उनके राज काल से मणिपुर में हिन्दू धर्म का आना प्रारम्भ हुआ।

त्रिपुरा और मणिपुर का संबंध बहुत ही पुराने समय से होता आया है। 'राजमाला' में उल्लेख है कि मणिपुर के राजा की पुत्री का विवाह त्रिपुरा के राजा तैदक्षिण के साथ सम्पन्न हुआ। त्रिपुरा के राजा माणिक्य ने (सन् 1785-1806) मणिपुर की राजकन्या के साथ विवाह करके दोनों राज्यों का संबंध और मज़बूत किया। दोनों राज्यों के इतिहास में सब कुछ दर्ज है, साथ ही इन दोनों राज्यों के बीच हुए संघर्ष का भी उसमें उल्लेख है।

त्रिपुरा के राजा द्वितीय धर्म माणिक्य के समय मुगलों ने आक्रमण कर के घाटी के कुछ भाग अपने कब्जे में कर लिया। इसके बाद राज परिवार में सिंहासन को लेकर आपसी संघर्ष हुआ। त्रिपुरा की इस असंतुलित अवस्था के मौके का फायदा उठाकर मणिपुर के राजा गरीबनिवाज (पामहैबा) ने त्रिपुरा पर चढ़ाई की। उन्होंने त्रिपुरा की फ़ौजों को हराकर दक्षिणी भाग अपने कब्जे में ले लिया। इससे राजा गरीबनिवाज का नाम 'तखेलङम्बा' पड़ गया।

त्रिपुरा के राजाओं ने मणिपुर की राज कन्याओं से विवाह करके दोनों राज्यों का सम्पर्क और मज़बूत किया। राजर्षि भाग्यचन्द्र की सुपुत्री रासेश्वरी को दिया हुआ राधामाधव का विग्रह आज तक आगरतला के राधानमइ के एक मन्दिर में स्थापित है। इस प्रकार दोनों राज्यों के राज परिवार में वैवाहिक सम्बन्ध बहुत लम्बे समय तक चलता रहा। दोनों राज्यों के बीच हुए संबंध के साक्षी स्वरूप भूमि, सामग्री तथा मैतै परिवार आज तक त्रिपुरा में मौज़ूद हैं।

## कठिन शब्दों के अर्थ—

आदी = अभ्यस्त, स्वामाविक।

जन-श्रुति = वह बात जिसे लोग परंपरा से सुनते आए हो, अफवाह।

निर्वासित करना = देश से निकालना।

मौजूद = उपस्थित, तैयार।

विवादास्पद = विवादग्रस्त, बाद विवाद करना।

निष्कर्ष = परिणाम, निश्चय।

मौलिकता = *असलियत, वास्तविकता।*

पन्ना = पृष्ठ

दर्ज है = अभिलेख है।

संघर्ष = टकराव, कलट।

असंतुलित = अव्यवस्थित, असंयत

सम्पर्क = मेल, कड़ी, संलग्र।

*प्रातिशोध* = बदला, प्रातिकार।

## प्रश्न-अभ्यास

1. प्राचीन त्रिपुरा का विवरण कौन-से ग्रंथ में मिलता है ? वह ग्रंथ किस शैली में लिखा हुआ है ?
2. मणिपुर के प्राचीन काल के नाम तथा पड़ोसी राज्यों तथा देशों द्वारा पुकारे जाने वाले मणिपुर के अलग-अलग नामों को लिखिए।

3. मैतै लोगों ने त्रिपुरा को किस नाम से पुकारा ?
4. 'तखेलङम्बा' कौन थे ? उन्हें तखेलङम्बा क्यों कहा गया ?
5. पुराने समय में मणिपुर और त्रिपुरा दोनों राज्यों के बीच संबंध स्थापित करने की मुख्य नीति क्या थी ?
6. प्राचीन काल में मणिपुर और त्रिपुरा दोनों राज्यों के बीच हुए सम्बन्धों को संक्षेप में लिखिए।
7. त्रिपुरा राज्य का एक नक्शा खींच कर उसमें राजधानी आगरतला निर्धारित कीजिए।
8. त्रिपुरा राज्य से संबंधित पुस्तकें पढ़कर उस राज्य के बारे में दस वाक्य लिखिए।
9. त्रिपुरा में रहनेवाले मणिपुरियों के बारे में अपने गुरुजनों से जानकारी प्राप्त कीजिए और उसे कक्षा में सुनाइए।

* * * * *

U4T6A3

पाठ–सात

# जनरल थांगाल

जब जब तेरह अगस्त आता है तब तब जनरल थांगाल का नाम भी अन्य शहीदों के नामों के साथ-साथ हमारे स्मरण में आता है। जनरल थांगाल वीर, साहसी और कुशल राजनीतिज्ञ थे। उनके जन्म स्थान तथा उनके माता-पिता के बारे में कुछ विवादास्पद बातें निकली हैं। कुछ पुस्तकों तथा लोकवाद से प्राप्त समाचार के अनुसार वाङ्खै अङोम लैकाई में सन् 1806 में उनका जन्म हुआ। उनके पिता का नाम श्री क्षेत्री सिंह तथा माता का नाम श्रीमती थोइनु देवी थे। उनके बचपन का नाम काङबम चिदानन्द सिंह था। बचपन से ही उनमें साहस, वीरता तथा कुशल राजनीतिज्ञ के गुण युक्त थे।

वे बचपन से ही संघर्ष में दिलचस्पी लेते थे। वे मृत्य से डरते नहीं थे। इन गुणों को देखकर महाराज गंभीर सिंह ने उन्हें सूबेदार के पद में नियुक्त किया। उन्होंने राज्य के विकास के बहुत काम किए। उन्होंने राज्य की राजनैतिक स्थिति का खूब अध्ययन किया। उन्होंने राज्य की शक्ति बढ़ाने के लिए विशेष नियम बनाए। उस समय राज्य का कानून बनाना और किसी गंभीर विषय पर विचार करना केवल राजदरबार में ही किया जाता था। उनका राजनीति संबंधी अनुभव इतना गहरा था कि कभी देश की संकटकालीन अवस्था में उनकी बात महाराजा तक मानते थे। अवस्थानुसार उनकी सलाह को सब दरबारी महत्व देते थे।

राजा चन्द्रकीर्ति जब कछार में थे तब थांगाल भी उनके साथ थे। महाराज को थांगाल की रणनीति में कुशल होना तथा सेनानायक होने का परिचय ज्ञात हुआ। इसलिए चन्द्रकीर्ति महाराज ने उनको 'जनरल' की उपाधि से विभूषित किया। राज परिवार के सभी लोग उनका सम्मान करते थे। जब कुलचन्द्र मणिपुर के राजा हुए तब कुलचन्द्र और युवराज टिकेन्द्रजीत दोनों ने शासन सम्बन्धी कार्यों में थांगाल जनरल की सलाह ली थी।

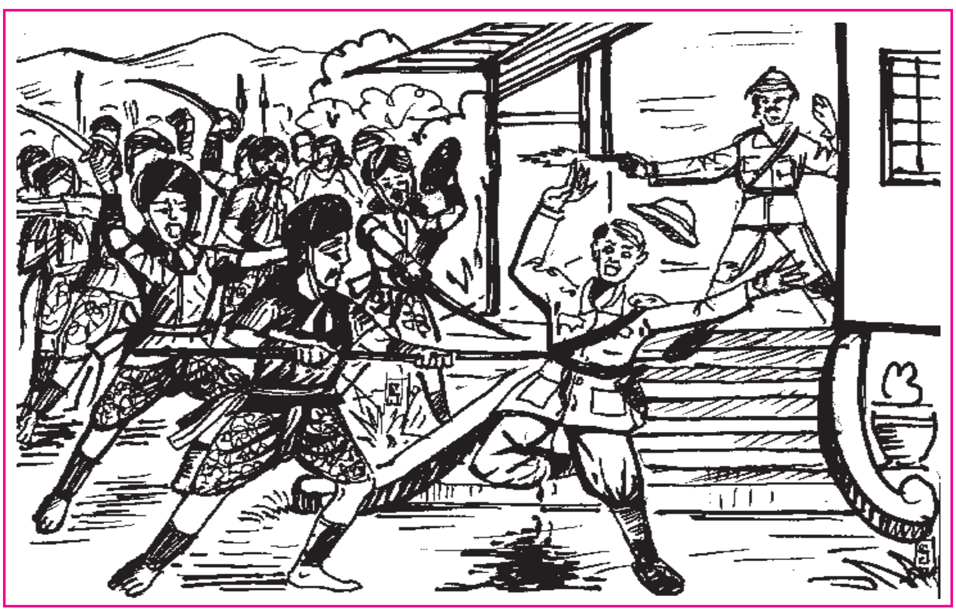

थांगाल बचपन से ही न्यायप्रिय थे। वे एक बार जो कह देते थे उसे अन्त तक निभाते रहते थे। उनका धर्म था राजाज्ञा का अन्त तक पालन करना तथा प्रजा को अपनी सन्तान की तरह प्यार करना। राज्य के हित के लिए उचित कार्य करना उनका विशेष गुण था। राजकुमार टिकेन्द्रजीत पर उनका विशेष प्रेम था। जब अंग्रेजों ने टिकेन्द्रजीत को पकड़ने और मारने के लिए षड्यंत्र किया तब वे बहुत नाराज हुए। इसलिए उन्होंने अंग्रेजों से बदला लेने के लिए फ़ौज तैयार करके अंग्रेज अफसरों को घेर लिया। उपायहीन अंग्रेज अफसरों ने राजमहल में शरण माँगी। शत्रु होकर भी टिकेन्द्रजीत ने उनको शरण दिया। टिकेन्द्रजीत के चले जाने के बाद क्रोधित जनता ने अपराधियों को दण्ड देने की आवाज उठाई। पहले तो थांगाल ने अपराधियों को राज्य की ओर से दण्ड देने की बात कही, किन्तु क्रोधित जनता उसे नहीं मान रही थीं। मुठ-भेड़ की नौबत आ गई तो उन्होंने अंग्रेजों को मौत के घाट उतार दिया। यह खबर सुनकर युवराज टिकेन्द्रजीत को बड़ा दुख हुआ। इस घटना का स्पष्टीकरण थांगाल ने इस प्रकार दिया था कि ''उन अपराधियों ने निरपराध मणिपुरियों को मार डाला; यह उसका परिणाम ही है।''

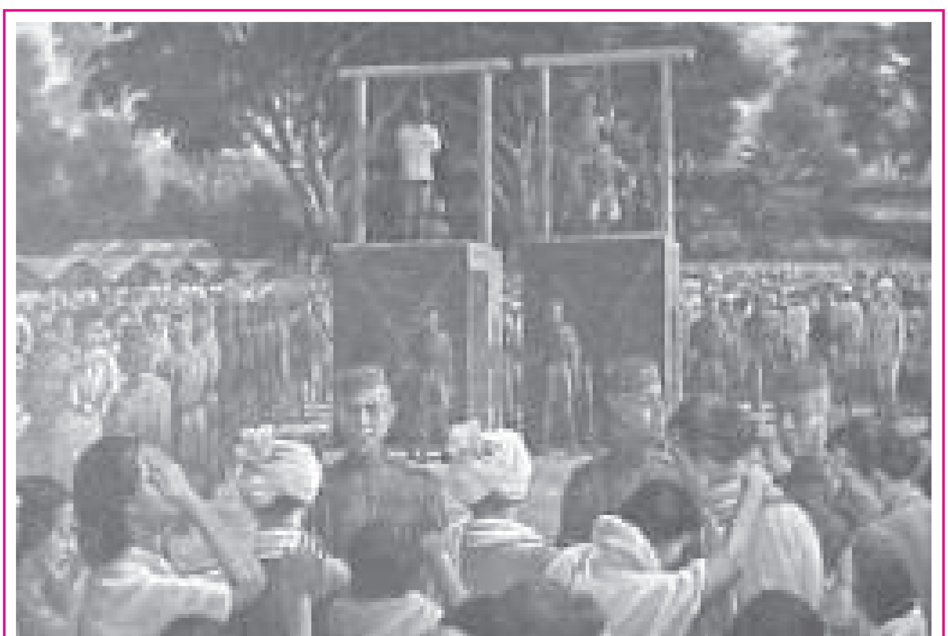

मणिपुरी जनता द्वारा अंग्रेजों के मारे जाने से अंग्रेज सरकार आग बबूला हो गई। उस घटना से अंग्रेज सरकार को मणिपुर पर आक्रमण करने का मौका मिल गया। उन्होंने बरमा(वर्तमान म्यान्मार), कोहिमा और कछार की तरफ से आक्रमण किया। थांगाल ने पूरी रण-कौशल, कूटनीति और बड़े सूझ-बूझ के साथ अंग्रेजों का सामना किया। परन्तु विशाल अंग्रेज सेना तथा शक्तिशाली हथियारों के सामने अल्प-संख्यक मणिपुरी सेना बहुत दिनों तक नहीं टिक पाई। फिर भी मणिपुर के देशभक्त वीरों ने अन्तिम साँस तक शत्रुओं का सामना किया। आखिर युवराज टिकेन्द्रजीत और जनरल थांगाल को अंग्रेजों ने बंदी बना लिया। 13 अगस्त 1891 के दिन को युवराज टिकेन्द्रजीत और राजनीतिज्ञ वीर योद्‌धा थांगाल को फाँसी पर लटका दिया। इस दिन को राज्य सरकार ‘‘देशभक्त दिवस ’’ के नाम से राज्यस्तर पर पालन कर रही है।

## कठिन शब्दों के अर्थ—

| | | |
|---|---|---|
| दिलचस्पी | = | शौक, मनोरंजकता। |
| नियुक्त करना | = | नियोजन करना, स्थिर करना। |
| कानून | = | विधान, विधि, राज नियम। |
| गंभीर | = | गहरा, ऊँची और भारी, जटिल। |
| अनुभव | = | प्रत्यक्ष ज्ञान, अनुभूति, भोगना। |
| गहरा | = | गंभीर, जिसकी थाह बहुत नीचे हो। |
| विभूषित करना | = | अलंकृत करना, शोभित करना, सम्मानित करना। |
| निभाते रहते थे | = | निर्वाह करते रहते थे, पालन करते रहते थे। |
| राजाज्ञा | = | राजा की आज्ञा, राज्य का आदेश। |
| हित के लिए | = | भलाई/उपकार/लाभ के लिए। |
| देशभकत | = | देशप्रेमी। |

| | | |
|---|---|---|
| मुठ-भेड़ | = | भिड़न्त, सामना। |
| नौबत | = | अवस्था, दशा, दुर्दशा। |
| मौत के घाट उतार देना | = | मार डालना, भृत्यु को प्राप्त होना। |
| आग बबूला होना | = | बहुत अधिक क्रुद्ध होना, गुस्सा होना। |
| नहीं टिक पाना | = | नहीं ठहर पाना, नही सह पाना। |
| सांस | = | श्वास, दम। |
| योद्धा | = | सैनिक, सिपाही। |

## प्रश्न-अभ्यास

1. थांगाल के बचपन का नाम क्या था ? बचपन में वे कैसे थे ?
2. थांगाल को 'जनरल' की उपाधि किसने दी और क्यों ?
3. मणिपुर को अंग्रेजो से हुए युद्ध मे पराजित क्यो होना पड़ा ?
4. 'देशभक्त दिवस ' कब और क्यों मनाया जाता है ?
5. जनरल थांगाल की जीवनी संक्षेप में लिखिए।
6. थांगाल के चारित्रिक गुणों को लिखिए।
7. अंग्रेजों के साथ किए गए युद्ध से संबंधित पाँच देशभक्तों के नाम लिखिए।
8. अन्य पुस्तकों को पढ़कर सन् 1891 के युद्ध के बारे में दस वाक्य लिखिए।

* * * * *

U6W8N9

पाठ–आठ

# सर सैयद अहम्मद

सर सैयद अहम्मद केवल भारत के नहीं वरन् सारे विश्व के मुसलमान परिवारों के लिए मर्यादा का बुत हैं। ऐसे इन्सान के पैदा होने से भारत में तो चार चाँद लग गए। के अपने माँ-बाप के प्रति यक़ीन रखते थे और अपने वतन पर विश्वास के साथ चाहत रखते थे। अपने कौम से प्यार कर काम करने वाले व्यक्ति के साथ चाहत रखते थे। अपने कौम से प्यार कर काम करनेवाला व्यक्ति हिन्दुस्तान में एक मिसाल जैसा था। उनका जन्म दिल्ली शहर में सन् 1817 को हुआ था। उस समय मुसलमान परिवारों में शिक्षा प्राप्त करनेवाले व्यक्ति बहुत कम थे।

सर सैयद अहम्मद ने पढ़-लिखकर दिल्ली के जिलाधीश के दफ्तर में पंजीयक के पद में काम किया। उनकी जानकारी तथा होशियारी की वजह से उनको वीजापुर के उप-न्यायाधीश के पद में नियुक्त किया गया।

उस समय भारत में व्यापक रूप से सैन्यबग़ावत चल रही थी। उन्होने वीजापुर में रह रहे बेसहारे, बेक़सूर अंग्रेज स्त्री-पुरुषों तथा बाल-बच्चों को आतंकवादियों के हाथ से बचाया। इस वज़ह से उनको क्रांतिकारियों ने जान से मार डालने की कोशिश की। बगावत खत्म होने के बाद उनको सरकार की ओर से बख्शीश दी गई। सरकार ने उनको और उनकी पहली औलाद को मासिक पेंसन दो सौ रुपए दिए।

उस वक्त भारत के मुसलमानों की हालत बहुत नाजुक थी। अधिकांश मुसलमान लोग प्रथा के अनुसार पढ़े-लिखे नहीं थे। स्त्रियों की जुबान में तो तालिम का नाम ही नहीं था। उन्होने समझा कि ये सब तालिम की कम जानकारी से हुआ था। अत: उन्होने पाठशालाएँ, मदरसे, कॉलेजों की स्थापना की। उन्होने धन, मान, इज्ज़त, कोशिशें आदि लोगों को शिक्षा देने में लगा दी।

पहले उनको अंग्रेजी की जानकारी नही थी। आखिर उनकी चाहत और अथक कोशिशों की वज़ह से बाद में उन्होने अंग्रेजी भाषा में पुस्तकें लिखना शुरू किया। उनकी पुस्तक 'दिल्ली के अवशेष' ने उसे एशियातिक सोसाइटी का सदस्य बना दिया। सन् 1868 में वे अपने बेटे के साथ इंलैण्ड गये। उनके बेटे को केम्ब्रीज विश्वविद्यालय में अध्ययन के लिए दाखिला मिला। वहाँ उसने अंग्रेजी तरीके की पाठशालाओं और अंग्रेजी तालिम की जाँच की। विलायत में उनका बड़े-बड़े लोगों ने स्वागत किया। वहाँ उनकी बड़ी तारीफ की गई। सच है, विद्वान और शिक्षित लोगों को तो सारी दुनिया में सम्मान मिलता है।

भारत आकर उन्होने अंग्रेजों की-सी पाठशालाएँ, मदरसे और कॉलेजों की स्थापना करनी चाही। वे अपने काम में सफल भी हुए। उन्होने उन शिक्षा संस्थानों में

साहित्य के अलावा विज्ञान, गणित और राजनीति विषयो को भी पढ़ाने का इन्तज़ाम किया। उनके द्‌वारा किए गए काम को देखकर मुसलमान के कुछ मजहबियों ने उनके खिलाफ आवाजें उठाईं। उन मज़हबियों का कहना था – ''मुसलमानों के लिए तो कुरान नमाजों के अलावा कोई दूसरी तालिम ही नहीं हो सकती थी क्योंकि कुरान के अलावा वे किसी पर यक़ीन नहीं करते थे।'' वे लोग सर सैयद को नफ़रत की निगाह से देखते थे। उनको अपनी जान के खतरे भी आए थे। फिर भी वे अपने कामों से मुँह नहीं मोड़ते थे। बाद में सार सेलाट जंग, हैदशबाद के निजाम, रामपुर के नवाब आदि मुसलमान विद्‌वानों ने शराफ़त से उनकी मदद करनी शुरू की। पटियाला के महाराज तथा अन्य हिन्दू नेताओं ने सर सैयद अहम्मद के उन कार्यों की भरसक प्रशंसा की।

उन्होने उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ में अपनी पसन्द के 'अलीगढ़ कॉलेज' की स्थापना की।

सरकार ने उनके परिश्रम, त्याग और कोशिशों को नजर में रखते हुए सन् 1866 में एक भव्य सभा के बीच शिक्षा व्यवस्थापक का पद उनके हवाले किया और के.सी.एस.आई. का ख़िताब भी हासिल किया।

## कठिन शब्दों के अर्थ—

| | | |
|---|---|---|
| बुत | = | मूर्ति |
| चार चाँद लग जाना | = | शोभा वृद्‌धि करना। |
| यक़ीन | = | विश्वास, भरोसा। |
| कौम | = | जाति। |
| मिसाल | = | उदाहरण। |

| | | |
|---|---|---|
| पंजीयक | = | रजिस्ट्रार, कुलसचिव। |
| होशियारी | = | समझदारी। |
| वज़ह | = | कारण। |
| सैन्य बग़ावत | = | सिपाहियों का संघर्ष। |
| बख़्शीश | = | इनाम, उपहार। |
| औलाद | = | सन्तान। |
| हालत | = | अवस्था। |
| जुबान | = | मुख। |
| तालिम | = | शिक्षा। |
| मदरसा | = | मुसलमानों की पाठशाला। |
| दाखिल करना | = | प्रवेश करना। |
| तारीफ़ करना | = | परिचय/प्रशंसा/बड़ाई करना। |
| मज़हबियों | = | इस्लाम धर्म पर विश्वास रखनेवाले। |
| खिलाफ | = | विरुद्ध। |
| नफ़रत | = | घृणा। |
| शराफ़त | = | सज्जनता से। |
| हवाले किए | = | प्रदान किए, सौंपे। |
| ख़िताब | = | उपाधि। |
| हासिल की | = | प्राप्त की। |

## प्रश्न-अभ्यास

1. किसके पैदा होने से भारत को चार चाँद लग गए ?
   वह कहाँ और कब पैदा हुआ था ?
2. किस वजह से सर सैयद अहम्मद को क्रान्तिकारियों ने जान से मारने की कोशिश की थी ?
3. सर सैयद अहम्मद के समय भारत के मुसलमानों की स्थिति क्यों नाज़ुक थी ?
4. शिक्षा के संबंध में मुसलमानों के विचार व्यक्त कीजिए।
5. सर सैयद अहमद ने कौन-सी पुस्तक लिखी ? उस पुस्तक से उनको क्या फायदा मिला ?
6. मज़हबियों ने सर सैयद अहम्मद को नफ़रत की निगाहों से क्यों देखा ?
7. सर सैयद अहम्मद की जीवनी संक्षेप में लिखिए।
8. सर सैयद अहम्मद ने कौन -सी ख़िताब हासिल की ?
   मणिपुर के किस सज्जन को वही ख़िताब प्रदान किया हुआ है ?

* * * * *

# मूल कर्तव्य

भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह —

क. संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थानों, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे।

ख. स्वतन्त्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे।

ग. भारत की संप्रभुता, एकता और अखण्डता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे।

घ. देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे।

ङ. भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे, जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे, जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों।

च. हमारी सामाजिक संस्कृति की गौरवशाली परम्परा का महत्व समझे और उसका परिरक्षण करे।

छ. प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अन्तर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं — रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दया भाव रखे।

ज. वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे।

झ. सार्वजनिक सम्पत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे।

ञ. व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरन्तर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सके।

## निर्देश

अध्यापकों को चाहिए कि वे संविधान के भाग ४ क, अनुच्छेद-५१ क में उल्लिखित इन मूल कर्तव्यों को छात्रों को समझाएँ और कण्ठस्थ कराएँ।

# राष्ट्रगान

जन-गण-मन-अधिनायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता।
पंजाब-सिंधु-गुजरात-मराठा,
द्राविड़-उत्कल-बंग,
विंध्य-हिमाचल, जमुना-गंगा
उच्छल जलधि-तरंग,
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मांगे,
गाहे तव जय-गाथा।
जनगण-मंगलदायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे।